# कुछ छोड़ा, कुछ छूट गया

देवेन्द्र

''ना जनता की बात है, ना जनता का साथ

फिर भी जनता की कथा लिखते काशीनाथ।''

श्रीकान्त काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में मेरा प्रवेश द्वार था। राबर्ट्सगंज, जिला सोनभद्र काशीनाथ जी की ससुराल थी, वह वहीं का रहने वाला था। मुझसे एक वर्ष सीनियर। उस समय वह हिन्दी से एम.ए. फाइनल कर रहा था। राबर्ट्सगंज के ही डॉ. रामनारायण शुक्ल काशीनाथ जी के साथ विभाग में लेक्चरर थे। अरविन्द चतुर्वेद भी राबटर्सगंज के ही थे। कुल मिलाकर राबर्ट्सगंज की एक साहित्यिक मंडली ने वाया हिन्दी विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के परिसर में नक्सलवाद का लाल परचम फहरा रखा था।

हर शनिवार की शाम रत्नाकर पार्क में एक तरफ कोने में बैठकर यह लोग स्टडी सर्किल का आयोजन करते थे। उन्हीं दिनों शाहजहांपुर से प्रकाशित होने वाली एक पुस्तकनुमा पत्रिका 'प्रतिमान' में काशीनाथ सिंह का एक लेख छपा था-'जनवादी लेखन कितना जनवादी'। उस दिन स्टडी सर्किल में उसी लेख पर बहस थी। ''गुरू, आज इन्हें बताना है कि जनवाद और जनवादी लेखन क्या होता है?''-चहकते हुए टुन्ना उर्फ जलेश्वर (महेश्वर का छोटा भाई) ने श्रीकान्त से कहा! जवाब में श्रीकान्त ने चैपाई की धुन में स्वरचित कुंडलियाँ सुनानी शुरू की-

''लिखते काशीनाथ कहीं का इधर-उधर,

लोग बिस्तरों पर हैं और सुबह का डर।''

पहली बार श्रीकान्त के साथ मैं वहाँ उस स्टडी सर्किल में गया था। काशीनाथ सिंह वहाँ नहीं थे। सिर्फ उनका लेख था। बहस में कोई बचाव-पक्ष नहीं था। सिर्फ हमलावर थे। मधुमक्खियों के छत्ते पर ढेला मारकर काशीनाथ सिंह मजे में अस्सी पर बैठे थे। उन्हें क्या मालूम कि जनवाद का क, ख, ग क्या होता है! कहानी की वर्णमाला लिख देने से कोई कहानीकार थोड़े हो जाता है! बहस में प्रयुक्त होने वाली शब्दावलियां मेरे लिए इतनी भारी-भरकम थीं कि मैं विस्मित हो चला।

गोष्ठी के अन्तिम और निर्णायक वक्ता डॉ. राम नारायण शुक्ल (कहानीकार नहीं) ने टिप्पणी की- ''बड़े खतरनाक लेाग हैं जी!''

उस स्टडी सर्किल में बहुत कुछ तों नहीं लेकिन जो चीज मेरे पल्ले पड़ी वह यह कि ''सारिका'', ''साप्ताहिक हिन्दुस्तान'' और ''धर्मयुग'' आदि के अलावा ''प्रतिमान'', ''पहल'', ''आवेग'' और ''कलम'' जैसी पत्रिकाओं की एक और दुनिया है। बल्कि यह कि आज का सार्थक साहित्य इन्हीं में लिखा जा रहा है। मेरे पूछने पर श्रीकान्त ने ही एक दिन बताया, ''साप्ताहिक हिन्दुस्तान और धर्मयुग भी कोई पत्रिका हैं? व्यंजन बनाने और स्वेटर बुनने के नुस्खे छापने वाली ये पत्रिकाएं दलाल पूंजीपतियों का गू पोंछने के लिए छापी जाती हैं।''

उस दिन की स्टडी सर्किल का एक अन्य असर मेरे ऊपर यह हुआ कि हिन्दी विभाग में काशीनाथ सिंह एक ऐसे लेखक हैं जिनका लिखा हुआ छपता रहता है और जिनका लिखा हुआ छपा करता है, वे तो बहुत बड़े लोग हेाते हैं। मैंने ऐसे किसी आदमी को करीब से नहीं देखा था। ओम प्रकाश द्विवेदी उस समय विभाग में ही रिसर्च स्कालर थे, मैंने उनसे पूछा-''काशीनाथ सिंह आपको पहचानते हैं क्या?''

और तभी एक दिन पहली बार। हिन्दी विभाग के सामने वाले चैराहे पर पेड़ के नीचे जो पान की दुकान थी, वहीं काशीनाथ जी चौथीराम जी के साथ खड़े थे। द्विवेदी जी मुझे लेकर गये और उन्होंने काशीनाथ जी को नमस्ते किया। काशीनाथ जी ने उन्हें कोई तवज्जो नहीं दी। नमस्कार का जवाब भी नहीं दिया और दूसरी ओर जाकर खड़े हो गये। मेरा मन अरुचि से भर गया। बहुत बाद में पता चला कि काशीनाथ जी नफरत की हद तक ओम प्रकाश द्विवेदी से चिढ़ते हैं। एक दिन गोदौलिया से लौटते हुए अचानक मैंने देखा कि लोलार्क कुण्ड वाली गली में सामने सीताराम वाली बर्फी की दुकान पर श्रीकान्त, टुन्ना, चौथीराम यादव और काशीनाथ सिंह आपस में कोई बात करते हुए खूब हंस रहे हैं और सबके हाथ में बर्फी के दोने हैं। यह मेरे लिए

विस्मयकारी घटना थी। जहाँ तक मैं जानता था टुन्ना और श्रीकान्त घोर नक्सलवादी क्रान्तिकारी थे और वह दोनों स्टडी सर्किल में थे। आपस की बातचीत में उन्हें संशोधनवादी, सुविधा परस्त, तिकड़मी और सोवियत संघ के एजेन्ट के रूप में बताया करते थे। एक सच्चे क्रान्तिकारी का फर्ज होता है कि ऐसे लोगों से दूर रहें, नफरत करे! और यह दोनों यहाँ इनके साथ इस तरह घुलमिल कर बातें कर रहे हैं। साथ-साथ मिठाई खा रहे हैं। मैं भौंचक था।

हिन्दी विभाग में शुक्ल जी का जो ठीहा था उसमें ओम प्रकाश द्विवेदी, अरविन्द चतुर्वेद, श्रीकान्त और टुन्ना आदि-आदि के साथ मैं भी एक स्थायी सदस्य था। यह ठीहा काशीनाथ सिंह का विरोधी था और व्यवस्था-परिवर्तन के लिए नक्सलवादी क्रान्ति का समर्थक। मुझे बतौर रचनाकार काशीनाथ सिंह में दिलचस्पी थी। इस बीच मैंने उनकी ढेर सारी कहानियां और उपन्यास 'अपना मोर्चा' पढ़ रखा था। मैं उनसे मिलना और परिचय करना चाहता था लेकिन ठीहे की नजर में संदिग्ध न हो जाऊँ, इसका भय और अपरिचय की झिझक। ठीहे पर अक्सर उनकी चर्चा होती थी और इस तरह, इस रूप में कि नम्बर एक, वह नामवर सिंह के भाई हैं। नामवर सिंह ने जबरदस्ती उन्हें कथाकार बना रखा है। नम्बर दो, विभागीय राजनीति में माहिर और तिकड़मी आदमी हैं। नम्बर तीन, जातिवादी हैं। नम्बर चार, चौथीराम यादव उनके सलाहकार हैं। (विषयान्तर होकर एक बात बता दूं कि हिन्दी कथा-साहित्य में ज्ञानरंजन और काशीनाथ सिंह का नाम जिस तरह साथ-साथ लिया जाता है, उसी तरह बनारस में काशीनाथ सिंह का जिक्र आते ही लोग अपने आप चौथीराम जी का नाम लेने लगते हैं)। हर आफत-विपत में साथ-साथ, लेकिन शाम को सड़क पर टहलते हुए आगे-पीछे पचास गज की दूरी बनाये रखते हैं। यह सम्भव नहीं है इस सृष्टि में कि एक का दुश्मन दूसरे के क़रीब भी फटक सके। वैसे चौथीराम जी अजातशत्रु हैं। उनका अपना कुछ नहीं है। न दोस्त, न दुश्मन। यह सारा कुछ काशीनाथ जी ने उनके हत्थे मढ़ रखा है। काशीनाथ जी की जिन्दगी में सबका विकल्प है लेकिन चौथीराम जी का नहीं। जब कई